सभी लोगों को महत्व देना, उनकी चाहे जो भी उम्र हो

मिशेल शिफेलबेन

मैं आशा करती हूं कि कोरोना वायरस महामारी से बुज़ुर्गों और समाज में उत्पीड़ित लोगों के प्रति हमारे दृष्टिकोण में आशातीत लाभ हो सकता है।

चूंकि कोविड-19 का बुज़ुर्गों पर सबसे ज़्यादा असर पड़ता है, अतः संभवतः यह वायरस हमें इन बहुमूल्य इंसानों और हमारे समाज में उनके द्वारा निभाई जा रही भूमिका के बारे में थोड़ा और अधिक सोचने-विचारने में मदद दे सकता है। जहां तक हमारे बुज़ुर्गों का सवाल है, मैं व्यक्तिगत रूप से यह आशा करती हूं कि हमारे

विचार का केंद्रबिंदु सिर्फ़ यह पता लगाना नहीं है कि हम उन्हें बीमार होने से कैसे बचा सकते हैं, बल्कि यह भी कि उनका जीवन हममें से बाकी लोगों को कैसे बहुत समृद्ध बना सकेगा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह बात समस्त मानव जीवन पर लागू होता है। बहाई शिक्षाओं में हमसे कहा गया है कि हम सबके जीवन को इस तरह से देखें कि हम समाज के हर स्तर पर हर व्यक्ति का सजग रूप से समावेश करें ताकि हर कोई हमारी सामूहिक उन्नति में अपना योगदान दे सके:

चूंकि मानव आत्माओं में क्षमता की मात्रा में अंतर है, योग्यता में भी अंतर पाया जाता है, अतः व्यक्तित्व एक दूसरे से भिन्न होंगे। लेकिन वस्तुतः यह एकता का कारण है, न कि कलह और शत्रुता का। यदि किसी बगीचे के सभी फूल एक ही रंग के हों तो आंखों के लिए उसका एकरस प्रभाव होगा; लेकिन यदि रंगों में विविधता है तो यह अत्यंत सुखद और अद्‌भुत होगा। फूलों के बीच रंगों की साज-सजावट और प्रतिबिंबन की क्षमता में अंतर बगीचे को सौन्दर्य और आकर्षण प्रदान करता है। इसलिए, भले ही हम अलग-अलग व्यक्तित्व के हों, विचारों में भिन्नता हो और हमारी सुरभियां अलग-अलग हों, तो भी हम एक ही दिव्य उद्यान के फूलों की तरह एक साथ सौहार्द के साथ रहने का प्रयास करें। भले ही प्रत्येक आत्मा की अपनी अलग-अलग सुरभि और रंग हो किंतु सब एक ही प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं, सभी उस उद्यान में बहने वाली एक ही हवा में अपनी सुगंध का योगदान देते हैं, सभी पूर्ण सद्भाव और सामंजस्य से अपना विकास जारी रखते हैं। परम प्रेम, सहमति और एकता के साथ विकास करते हुए, एक ही महासागर की लहरों, एक ही वन के वृक्षों की तरह बनो। - अब्दुल-बहा, विश्व शांति की घोषणा

क्या आप अपने बुज़ुर्गों के बिना समाज की कल्पना कर सकते हैं? यह निस्संदेह ऐसे बगीचे की तरह दिखेगा जिसमें केवल एक ही रंग के फूल खिलते हैं - आंखों को ऊब से भर देने वाला, नीरस। किंतु हमारे बुज़ुर्गों के पास बहुत कुछ है जिसका वे योगदान दे सकते हैं। फिर भी यौवन और सौन्दर्य के प्रेम में निमग्न हमारी संस्कृति अपने वरिष्ठ लोगों का सम्मान नहीं करती है। उम्र के कारण मनुष्य को अपने ध्यान में रखे जाने, सुने जाने और सम्मान पाने की क्षमता प्रभावित होती है।

उदाहरण के लिए, हमारे समाज में वृद्धों के प्रति पूर्वाग्रहों से महिलाएं विशेष रूप से प्रभावित होती हैं। कई वरिष्ठ महिलाएं, जो हमारे समाज में युवावस्था और सुंदरता पर केंद्रित होने के बारे में अत्यधिक जागरूक बने रहने के लिए सामाजिक रूप से प्रशिक्षित हैं, वे उम्र के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को बहुत अच्छी तरह समझती हैं - क्योंकि वे हर रोज इसका शिकार होती हैं।

सरल शब्दों में कहें तो महिलाओं को सिखाया गया है कि हमारी ताकत, हमारा स्टेटस, लोगों की नजर में बने रहना और यहां तक कि हमारी सुरक्षा भी हमारे शारीरिक गठन से पुरुषों को प्रभावित किए रहने की क्षमता से जुड़ी हुई है।

किसी भी जाति या आर्थिक वर्ग में पुरुषों की स्थिति चाहे जो भी हो, लेकिन यह सच है कि पुरुषों का महिलाओं पर वर्चस्व होता है – चाहे संसाधनों तक पहुंच की बात हो या शारीरिक शक्ति का सवाल। इसके अलावा, समाज में महिलाओं को बहुत कम उम्र से ही बताया जाता रहा है कि हमारी दिमागी क्षमता का कोई खास महत्व नहीं है।

हालांकि अब परिवर्तन हो रहा है लेकिन फिर भी यह एक सामाजिक मानदंड बना हुआ है, यह बात हमें माननी पड़ेगी। जब हम यह मान लेते हैं तो हम यह समझना शुरू कर सकते हैं कि यह महिलाओं की मानसिकता पर कैसे काम करता है - जो अभी भी गहराई से जड़ जमाए हुए है और यहां तक कि यह भी तय करता है कि युवा लड़कियों को स्वयं को कैसे देखना चाहिए। इसमें अश्वेत और सांवली महिलाओं के खिलाफ भेदभाव को भी जोड़ दें और इस प्रकार नारीत्व का उत्पीड़न एक भारी बोझ बन जाता है।

इस अनुक्रम और सामाजिक कंडीशनिंग के परिणामस्वरूप, महिलाएं अपने पूरे जीवन में, समय गुजरने के प्रभाव को पराजित करके, यथासंभव सुंदर और युवा बने रहने के निरर्थक प्रयास में अपनी पूरी ताकत झोंक देती हैं। अरबों डॉलर का कॉस्मेटिक उद्योग इस सच्चाई का गवाह है।

महिलाओं के लिए यौवन + सुंदरता = शक्ति का समीकरण, कई लोगों के लिए, एक बेहद अस्वस्थ जुनून बन जाता है। क्योंकि महिलाओं को सामाजिक रूप से यह मानने के लिए तैयार किया जाता है कि उनका मूल्य भौतिकवादी दृष्टिकोण पर आधारित है, अतः मनुष्य के रूप में हमारी वास्तविकता की यह अंतर्निहित मान्यता महिलाओं से मांग करती है कि वे यथासंभव अधिक से अधिक सुंदर बनी रहें - बस इसलिए कि उन्हें अधिक देखा और सुना जा सके, और वे सबकी नजर में बनी रहें।

महिलाएं अच्छी तरह समझती हैं कि उम्र बढ़ने के साथ समाज उनके साथ कैसा व्यवहार करता है। हम जानते हैं कि जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हमारी खूबसूरती और जवानी उतनी ही कम होती जाती है और हम लोगों की नजर से उतने ही गायब होने लगते हैं। बहाई शिक्षाएं हमें सावधान करती हैं कि हमें जीवन के केवल भौतिक पक्ष को महत्व नहीं देना चाहिए क्योंकि वे शाश्वत नहीं हैं:

भौतिक आकर्षण समाप्त हो जाएगा, गुलाबों की जगह बच जाएंगे सिर्फ कांटे, और सुन्दरता एवं यौवन कुछ दिन रहकर विलीन हो जाएंगे। लेकिन वह जो कि सदा अविनाशी रहेगा वह है उस 'एकमेव सत्य का सौन्दर्य', क्योंकि उसकी आभा कभी नष्ट नहीं होती और उसकी गरिमा सदा अक्षुण्ण रहती है। उसका सम्मोहन सर्वशक्तिशाली है और उसका आकर्षण असीम। - अब्दुल-बहा, *अब्दुल-बहा के लेखों की चयनिका*

हमारे भौतिकवादी दृष्टिकोण और सामाजिक कंडीशनिंग के कारण, जो कि मानव मूल्य को त्वचा के रंग सहित दिखावे से जोड़ता है, जो कुछ भी कहा गया है वह अश्वेत महिलाओं के लिए बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है और हमारे दमनकारी समाज द्वारा उन पर डाले गए पहले से ही अकल्पनीय बोझ को और बढ़ा देता है। नतीजतन, सभी लिंगों के अश्वेत बुज़ुर्ग हमारे समाज में घोर उपेक्षा का अनुभव करते हैं।

जब हम किसी इंसान की कीमत सिर्फ़ बाहरी खूबसूरती और यौवन से मापते हैं, तो इसका हमारी बुज़ुर्ग आबादी पर विनाशकारी असर पड़ता है। नस्ल, लिंग और उम्र मिलकर इस असर को और ज्यादा बढ़ा देते हैं। यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि एक समाज के तौर पर हम इस भौतिकवादी नज़रिए से सभी पर पड़ने वाले असर को समझें - और इस प्रक्रिया में हम इंसान के तौर पर फिर से सोचें कि हम कौन हैं।

हमारा मानवीय मूल्य हमारी आध्यात्मिक प्रकृति और शक्तियों में निहित है न कि भौतिक प्रकृति और क्षमताओं में, जिसे हमारे समाज ने इतना प्रमुख बना दिया है।

हर इंसान की सच्ची कीमत और महानता इस बात से उत्पन्न होती है कि हम एक आध्यात्मिक प्राणी के रूप में कौन हैं — और आध्यात्मिक शरीर कभी भी भौतिक शरीर की तरह बूढ़ा नहीं होता। इन बातों को समझ लेने से हमें दूसरों के साथ अपने व्यवहार में हर पल पूरी तरह से सजग और सचेत रहना सीखने में भी मदद मिलेगी — यह कि नस्ल, उम्र और लिंग चाहे कुछ भी हो, सभी इंसान सुयोग्य हैं। हम अपने समाज में सबसे नजरअंदाज किए गए और उत्पीड़ित लोगों के बारे में विशेष रूप से जागरूक होने और उनके वास्तविक मूल्य और उनके उद्देश्य और संभावना को प्रकट करने की क्षमता को पहचानकर और उसे कायम रखकर इस अवमूल्यन का सामना करते हुए यह दृष्टिकोण अपनाते हैं।

शिक्षा और उन्नति के साथ, इन कारकों में थोड़ा सुधार हो रहा है, हालांकि वे अभी भी युवावस्था और सुंदरता के साथ भौतिकवादी जुनून की झूठी कहानी से जूझ रहे हैं। यह कहानी सभी को प्रभावित कर सकती है, लेकिन सबसे प्रबल रूप से यह हमारे बुजुर्गों को प्रभावित करती है। हम आसानी से समझ सकते हैं कि, कई उदाहरणों में, यह अमानवीय कहानी हमारे बुजुर्गों को किस तरह दरकिनार कर देती है, उन्हें चुप करा देती है, अलग-थलग कर देती है और उनका अवमूल्यन करती है। जब यह झूठी श्रेष्ठता की भावना सामने आती है तो हमारे बुज़ुर्गों के जीवन के अनुभव और ज्ञान को अप्रासंगिक, "समझ में नहीं आने योग्य", "पुराने जमाने का", "जिद्दी" और/या "समय से पीछे" के रूप में लेबल करने, इत्यादि का खतरा होता है। इसलिए, हमें उम्र और बाहरी दिखावे से परे देखना चाहिए, आध्यात्मिक प्राणियों के रूप में अपने बुज़ुर्गों के महत्व का ध्यान रखना चाहिए और उनके जीवन के अनुभव से जो मूल्यवत्ता प्राप्त होती है उसका सम्मान करना चाहिए।

मुझे व्यक्तिगत रूप से उम्मीद है कि हमारे विकास और हमारे अस्तित्व की आध्यात्मिक प्रकृति के बारे में सीखने के साथ, सभी मनुष्यों का मूल्य और महत्व भी बढ़ेगा। इस बीच, इस कोरोना वायरस प्रकोप के दौरान, हम सभी अपने बुज़ुर्गों तक पहुंचने, अपने परिचितों से जुड़ने और उनके साथ गहरी और सार्थक बातचीत करने के तरीकों पर विचार कर सकते हैं। उनसे सवाल पूछें। उनके द्वारा बताए गए जीवन के अनुभव को ईमानदारी से सुनें। मैं व्यक्तिगत रूप से गारंटी देती हूं कि आप बहुत कुछ सीखेंगे। हमें अपने बुजुर्गों से अपनी बुद्धि और अपने युवाओं से अपनी ऊर्जा और रचनात्मकता साझा करने की आवश्यकता है।